ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 405-407
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

मुर्गी पालन व्यवसाय : कृषि अर्थव्यवस्था का ए टी एम

डॉ0 इन्द्र प्रताप सिंह

एसो० प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष – पशुपालन और डेयरी विभाग,श्री मुरली मनोहर टाउन पी० जी० कालेज, बलिया (जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया– उ०प्र०) भारत

Received-17.12.2021, Revised-23.12.2021, Accepted-29.12.2021 **E-mail : ipsinghahd@gmail-com**

सारांशः मुर्गी पालन व्यवसाय अर्थात पोल्ट्री फार्म का बिजनेस चलाना वर्तमान समय में एक लाभकारी बिजनेस है। इस बिजनेस में मुनाफा बेहिसाब होता है हालांकि, इस बिजनेस को चलाने के लिए थोड़ा धैर्य और अधिक मेहनत करने की जरूरत होती है। इसे हम इस तरह भी कह सकते हैं कि पोल्ट्री फार्म का बिजनेस को सही तरीके से किया जाये, तो इसमें बेहतर मुनाफा संभव है।

जहां तक पोल्ट्री फार्म बिजनेस में धन के इन्वेस्टमेंट की बात है, तो पोल्ट्री फार्म का बिजनेस करने के लिए धन की आवश्यकता, फार्म की प्रकृति और आकार पर निर्भर करता है। पोल्ट्री फार्म का बिजनेस छोटे स्तर से लेकर बड़े स्तर तक किया जाता है। सबसे खास बात यह है कि पोल्ट्री फार्म का बिजनेस करने के लिए सरकार की तरफ से आर्थिक मदद बिजनेस लोन के रुप में होती है

इसी के साथ आपको जानकारी के लिए बता दें कि बिजनेस का विस्तार करने के लिए देश की प्रमुख नॉन बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनी 'ZipLoan' की तरफ से भी 7.5 लाख तक का बिजनेस लोन सिर्फ 3 दिन' में दिया जाता है

कुंजीभूत शब्द– मुर्गी पालन, व्यवसाय, पोल्ट्री फार्म, लाभकारी बिजनेस, कृषि अर्थव्यवस्था, मुर्गे–मुर्गिया, बतख तथा हंस

मुर्गीपालन को पोल्ट्री फार्म और व्यवसाय को बिजनेस के रूप में भी जाना जाता है। मुर्गीपालन के अन्तर्गत मुर्गे–मुर्गिया, बतखें तथा हंस आदि पाले जाते हैं। इनसे अण्डे, मांस और पंख मिलते हैं। मुर्गियाँ सामान्यतः बहुत कम अनाज या कूड़े–करकट पर जीवित रह सकती हैं। इसकी विशेष देखरेख की आवश्यकता नहीं होती है। ये किसी भी प्रकार की जलवायु में रह सकती हैं।

पोल्ट्री फार्म का बिजनेस दो तरह का होता है– भारत सहित पूरी दुनिया में मुर्गे का मांस और मुर्गी का अंडा बहुत अधिक मात्रा में भोजन के तौर पर खाया जाता है इसी के साथ यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि पोल्ट्री का बिजनेस मुख्य रुप से दो तरह का होता है: मांस का बिजनेस, 2.अंडे का बिजनेस

जब कोई व्यक्ति पोल्ट्री का बिजनेस शुरु करता है तो उसके सामने यह दोनों विकल्प होता है कि वह चाहे तो मुर्गे की मांस और मुर्गी के अंडा का कारोबार कर सकता है लेकिन, बहुत मामलों में यह देखने को मिलता है कि लोग एक समय में एक ही पोल्ट्री का बिजनेस करते हैं

एक विकल्प चुनने के पीछे कई कारण होते हैं इन कारणों को में लागत और रख दृ रखाव के लिए अलग से लागत लगना शामिल है जब कोई व्यक्ति मुर्गे की मांस बेचने के लिए पोल्ट्री फार्म लगाता है तो उनकी सबसे बड़ी चुनौती होती है– चूजों को किसी तरह के संक्रमण से बचाते हुए मांस के लिए तैयार करना

वहीं जब अंडा उत्पादन के लिए पोल्ट्री फार्म लगाया जाता है तो यहां सबसे बड़ी चुनौती होती है– मुर्गियों को उचित पोषणाहार करना ताकि मुर्गियां एक समय के बाद अंडों का उत्पादन शुरु हो सके जब अंडों का उत्पादन शुरु हो जाता है तो फिर अंडों के रख–रखाव और ट्रांसपोर्टेशन के लिए उचित व्यवस्था करना होता है

भारत का विश्व में अण्डा उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख स्थान है। एवं चिकन उत्पादन की दृष्टि से 20वाँ स्थान है। वर्तमान में भारत के पास शोध और उत्पादन के उन्नत साधन उपलब्ध है। भारत के विभिन्न स्थानों पर फार्मिंग पद्धति का उपयोग किया जाता है। देश में सबसे अधिक मुर्गियाँ आन्ध्र प्रदेश में हैं।

आवास (Habitat)– मुर्गी के लिए रेतीले, कंकरीले एवं चूने युक्त स्थान उपयुक्त होते हैं। पथरीली एवं नमी युक्त स्थान हानिकारक होता है। इसके आवास जमीन से 3–4 इंच ऊपर की ओर उठाकर बनाये जाते हैं, जिनका आमाप 6X 5 X 5 फीट होता है तथा इसमें 6–8 मुर्गे सरलता से रह सकते हैं। व्यायाम एवं घूमने–फिरने के लिए कम से कम 40 X 30 फीट स्थान भी आवश्यक है।

वर्तमान में मुर्गी गृह (पिंजरे) भी आवश्यकतानुसार बनाये जा सकते हैं। ये लकड़ी, सीमेन्ट एवं ईंटों से बनाये जाते हैं। परन्तु धातु निर्मित गृह सर्वाधिक उपयुक्त होते हैं। इनकी छत लोह के टीन या लकड़ी के फंटों से ढकी जाती है। मुर्गी को संक्रमण से बचाने के लिए गृह में केरोसीन या फिनायल का छिड़काव करना चाहिए।

विकसित देशों में मुर्गीपालन पूर्णतः नियंत्रित बन्द आवास क्षेत्र में किया जाता है। ये वातानुकूलित धातु से बने जालीदार शेल्फ होते हैं। यहाँ मुर्गियाँ वातावरणी प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त रहती हैं।

भोजन (Food)– मुर्गी को पालने के लिए इनका उचित पोषण होना चाहिए, जिससे आकार व वजन में अच्छी वृद्धि करें तथा अण्डे भी बड़े एवं उच्च गुणवत्ता के हों। भिन्न–भिन्न आयु वर्गों के अनुरूप मुर्गो की पोषण आवश्यकता भिन्न–भिन्न होती हैं। इनको सन्तुलित आहार में कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, विटामिन, एन्जाइम तथा खनिज आदि का मिश्रण दिया जाता है।

मुर्गी की प्रजातियाँ (Castes of fowls)– मुर्गीपालन माँस एवं अण्डे प्राप्त करने के लिए होता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

मुर्गी को इनकी विशेषताओं के आधार पर निम्न श्रेणियों में बाँटा गया है –

i. अण्डे देने वाले प्रकार
ii. माँस उपलब्ध करवाने वाले
iii. मनोरंजन एवं सजावटी प्रकार
iv. अण्डे एवं माँस दोनों उपलब्ध करवाने वाले।

मुर्गियों की मुख्य नस्लें देशी असील– उत्तरप्रदेश में रामपुर और लखनऊ जिलों में तथा आन्ध्र में हैदराबाद जिले में और घागूस आन्ध्र एवं कर्नाटक में पाली जाती हैं। इसके अतिरिक्त ह्वाइट लेघोर्न, रोड आइलैण्ड रैंड, ब्लैक मिनोक जैसी विदेशी नस्लें भी पाली जाती हैं।

मुर्गी में प्रजनन (Breeding in Fowls)– मुर्गी का रख– रखाव एवं इनका प्रजनन एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया– है। लेगहॉर्न एवं रहोड आइलैण्ड किस्मों को उन्नत किस्म के साथ संकरित कराकर उच्च गुण्वत्ता वाली प्रजातियाँ प्राप्त की जाती हैं।

कुक्कुटों में कुशल प्रजनन हेतु निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है –

i. प्रजनन हेतु बड़े आकार के ह्रष्ट–पुष्ट सदस्यों का ही चुनाव करना चाहिये। रोगी, आकार में छोटे व सीमित वृद्धि वाले मुर्गी को इस कार्य हेतु प्रयोग में नहीं लेना चाहिये।
ii. सामान्यतः यह ध्यान रखना चाहिये कि दो साल की मुर्गियों का एक साल के मुर्गे के साथ प्रजनन करवाना चाहिये और यह भी सुनिश्चित कर लेना चहिये कि दोनों नर व मादा एक ही प्रजाति के न हों।
iii. हमेशा ही ऐसी मुर्गी का चुनाव करना चाहिये, जो उच्च मात्रा में अण्डे देने की क्षमता रखती हों। इसी के साथ मुर्गे के चुनाव में आकार के अतिरिक्त, माँस की गुणवत्ता, सक्रियता, सुदृढ़ पंखों का विन्यास, हड्डियों का आकार, वर्ण इत्यादि का भी पूरा ध्यान रखना आवश्यक है।
iv. एक मुर्गे के साथ चार मुर्गियों से अधिक का प्रजनन नहीं करवाना चाहिये। इस प्रकार सीमित प्रजनन उत्कृष्ट परिणाम देता है।
v. पैतृक रिकॉर्डस (।दबमेजतंस तमबवतके) के आधार पर मुर्गी में प्रजनन सुनिश्चित करना चाहिए। इसके अनुरूप अधिक अण्डे देने वाली व स्वस्थ एवं ह्रष्ट–पुष्ट नस्लों वाली लाइनों का चुनाव करके ही इनमें प्रजनन करवाना चाहिये।
vi. प्रजनन हेतु ऐसी मुर्गियों का चुनाव करना चाहिये, जिनकी चोंच छोटी एवं सिर के अनुपात में सही बैठती हो। स्वस्थ कलंगी एवं इसका चमकीला लाल रंग का होना भी मुर्गियों के स्वरूप एवं अधिक अण्डे देने वाले लक्षण का द्योतक है।
vii. निर्मोचन (उवनसजपदह) एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें मुर्गी के पुराने पंख झड़ते हैं एवं नवीन पंखों का विकास होता है। मुर्गियों में अण्डे देने की प्रवृत्ति एवं निर्मोचन की क्रिया के मध्य गहरा अंतर्सम्बन्ध है। अधिक अण्डे देने वाली मुर्गियों में निर्मोचन देरी से प्रारम्भ होता है, परन्तु शीघ्र ही पूर्ण हो जाता है, इसके विपरीत कम अण्डे देने वाली मुर्गियों में निर्मोचन तो देरी से प्रारम्भ होता है, किन्तु लम्बे समय तक गतिशील बना रहता है।
viii. अण्डे देने की प्रक्रिया त्वचा के वर्ण पर निर्भर करती है। पक्षी अपने भोजन से जैन्थोफिल वर्णक ग्रहण करते हैं जो इनकी त्वचा पर पीले रंग के रूप में एकत्रित हो जाता है। अतः वर्णकता जितनी अधिक गहन होती है उतनी ही उन्नत किस्म के मुर्गे होते हैं एवं इनके अण्डे देने का रिकॉर्ड अच्छा होता है।
ix. अण्डे देने का चक्र मुर्गी में ऐसी प्रक्रिया है जिसके आधार पर प्रजनन हेतु मुर्गियों का चुनाव किया जाता है। अण्ड–चक्र नियमित होने की स्थिति में मुर्गियाँ प्रतिदिन एक अण्डा देती है इसके विपरीत अन्य तीन–चार दिनों के अन्तराल पर एक अण्डा देती हैं। इसी के साथ–साथ प्रजनन हेतु ऐसी मुर्गियों का चयन किया जाता है जो अपने अण्डों को सेने में कम समय व्यतीत करती हैं।

पालन तकनीकें (Poultry rearing techniques)– पोल्ट्री पक्षियों की देख–देख एवं इनके प्रबन्धीकरण को ही पालन–पोषण कहते हैं। अण्डों एवं माँस की प्राप्ति के लिए मुर्गों को फार्म हाऊसों में पाला जाता है एवं इनकी उचित देखभाल की जाती है। इस कार्य हेतु निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाता है –

i. **अण्डों का चुनाव (Selection of Eggs)–** स्वस्थ चूजे की प्राप्ति एवं उन्नत संवर्धन हेतु अण्डों का चुनाव एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। ऐसे अण्डों को चुना जाना अपेक्षित है जो जननक्षम हो, आकार में न तो बहुत अधिक बड़ा और न ही बहुत अधिक छोटा हो। अर्थात् सामान्य आकार का हो तथा ताजा दिया गया हो। गहरे भूरे रंग के कवच वाले अण्डे, हल्के रंग के कवच वाले अण्डों की तुलना में शीघ्रता से चूजे उत्पन्न करते हैं।
ii. **ऊष्मायन एवं स्फोटन (Incubation and Hatching)–** लगभग 21 दिनों के उपरान्त मुर्गी के अण्डों से चूजे बाहर निकलते हैं। अण्डे के भीतर ही इनके विकास एवं परिवर्धन के विभिन्न चरण सम्पन्न होते हैं। इस दौरान अण्डों को उचित तापक्रम, आर्द्रता एवं अन्य वातावरणीय परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। जिसे ऊष्मायन की क्रिया के द्वारा मादा द्वारा प्राकृतिक रूप से प्रदान किया जाता है। इसे प्राकृतिक ऊष्मायन कहते हैं। इसके विपरीत कृत्रिम ऊष्मायन प्रक्रिया में एक बन्द बक्से या चेम्बर में निर्धारित तापक्रम की जो कि 37°ब–38°ब तक हो सकता है व्यवस्था करे अण्डों को इसमें रख दिया जाता है। उचित वायु के प्रवाह एवं आर्द्रता का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। इस उपकरण को उष्मायन करने वाला यंत्र (पदबनइंजवत) कहते हैं। ऊष्मायन के फलस्वरूप ही अण्डों से चूजे विकसित होते हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

iii. **चूजों की देख–भाल (Rearing of Chicken)–** अण्डों के स्फोटन के फलस्वरूप इनसे चूजे बाहर निकलते हैं। इनके प्रबन्धीकरण हेतु निम्नलिखित तथ्य महत्त्वपूर्ण हैं –

a. स्फोटन के 36 घण्टों के उपरान्त चूजों को मादा के साथ–साथ पुराने घोंसलों से हटाकर नए सूखे व अपेक्षाकृत कुछ गर्म स्थान पर विस्थापित कर देना चाहिए।
b. मादा को खाने हेतु उन्नत एवं पौष्टिक सामग्री उपलब्ध करवानी चाहिये, साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिये कि चूजों को प्रति दो घण्टों के बाद भोजन की प्राप्ति हो रही है। तीन दिन के चूजों के लिए दूध व ब्रेड तथा गेहूँ के दानों के छोटे–छोटे टुकड़े उन्नत भोजन है।
c. 45 दिवस के होने तक चूजों को एक दिन में कम से कम छः बार भोजन दिए जाने की व्यवस्था करनी चाहिए।
d. 45 दिवसों के उपरान्त शिशुओं को मांस, कच्चा प्याज एवं गेहूँ के व्यंजन दिए जाने अपेक्षित है।
e. तीन महीनों के हो जाने पर इन्हें तेल का केक प्रतिदिन दिया जा सकता है।
f. पीने के लिए इन्हें स्वच्छ जल उपलब्ध करवाना चाहिये। पीने के पानी में कुछ बूंदें पोटेशियम परमेंगनेट की पर मुर्गों को अनेक संक्रमणों से मुक्ति दिलाई जा सकती है।
g. सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिये। इनके शरीर, पिंजरे, घोंसले आदि की सफाई की सम्पूर्ण व्यवस्था की जानी चाहिए।
h. छः माह के हो जाने पर इन्हें दिन में तीन बार अनाज के दानों, हरी सब्जियों व तरल भोजन का सेवन करवाना चाहिये।

पोल्टी के रोग (Poultry Diseases)–

1. रानीखेत (**Ranikhet**)कृ यह मुर्गी का सबसे सामान्य रोग है। इसमें मुर्गियों को ज्वर व डायरिया की शिकायत होती हैं। इनकी चोंच खुली रहती हैं तथा इसमें म्यूकस भरा रहता हैं इन्हें अधिक प्यास लगती है तथा रोग के अधिक उग्र होने पर पंखों को लकवा लगना, गोल गोल चक्कर लगाने की प्रवृत्ति विकसित होना आदि लक्षण विकसित होने लगते हैं।
2. स्पाइरोकीटोसिस (**Spirochaetosis**)कृ यह रोग टिक्स के कारण होता है। टिक रात्रि के समय मुर्गियों का रक्त चूसती हैं व दिन में अन्यत्र चली जाती हैं। इससे बचाव के लिए पिंजरे पूरी तरह से धातु के बने होने चाहिए।
3. एपोप्लेक्सी (**ApopleÛy**)कृ यह रोग अधिक भोजन ग्रहण करने से होता है जिससे पेचिश व अतिसार जैसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य रोग जैसे सामान्य जुकाम, ठण्ड, चिकन पॉक्स (**chicken poÛ**), कॉलेरा इत्यादि भी मुर्गियों में उत्पन्न होते हैं।

निष्कर्ष –

1. पोल्ट्री फार्म का बिजनेस करने से बेहतर मुनाफा प्राप्त होने की पूरी संभवना होती है।
2. इस बिजनेस में 40: तक मार्जिन बचत के तौर पर मिलता है।
3. रोजगार के अवसरों का सृजन होता है।
4. सीमित संसाधन और कम लागत में भी कारोबार शुरु किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एप्पलबी, एम.सी., ह्यूजेस, बी.ओ., एलसन, एच.ए. (1992). पोल्ट्री उत्पादन प्रणालीः व्यवहार, प्रबंधन और कल्याण . सीएबी इंटरनेशनल।
2. वैश्विक पशु वध सांख्यिकी और चार्ट, फ़ौनालिटिक्स, 10 अक्टूबर 2018–5 नवंबर 2019.
3. विश्व खेती में करुणा – पोल्ट्री - Ciwf-org-uk - 3 अक्टूबर, 2018.
4. विश्व खेती में करुणा – मुर्गी पालन, विश्व खेती में करुणा, 3 अक्टूबर 2018.
5. www-theguardian-com
6. विश्व की स्थिति 2006 वर्ल्ड वॉच इंस्टिट्यूट, पृष्ठ 26.
7. खाद्य–पशु उत्पादन अभ्यास और दवा का उपयोग, नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्निकल इन्फॉर्मेशन, नेशनल एकेडमीज प्रेस (यूएस),1999. 28 फरवरी, 2016.
8. वुड्स, प्रिंस टी. (अक्टूबर 2008),फ्रेश–एयर पोल्ट्री हाउस, नॉर्टन क्रीक प्रेस, 18 अप्रैल 2012.
9. नॉर्थ और बेल, ष्कमर्शियल चिकन प्रोडक्शन मैनुअल, 5वां संस्करण. वैन नोस्ट्रैंड रीनहोल्ड, 1990, पृष्ठ 189.

*****